روپے، دو سو روپے یا چار سو روپے بہت معنے رکھتا ہے، اس سے وہ اپنے بہت سارے کام کرلیتے ہیں۔

مہودے، میں آپ کے توسط سے سرکار سے یہ گزارش کرتی ہوں کہ جس طرح بہار سرکار نے ساٹھ سال کے لوگوں کو وردّا پ پنشن اسکیم کا فائدہ دینے کا کام کیا ہے، اسی طرح سے دیش بھر میں سرکار یہ کام کرے کہ ہر بوڑھے اور بوڑھیوں کو کچھ پنشن دے، تاکہ وہ اپنی ضرورتوں کو پورا کرسکیں۔

(ختم شد)

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): महोदय, मैं स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करती हूँ। सर, मैं यह बताना चाहती हूँ कि पाँच-पाँच महीने, छः-छः महीने के बाद उनका पैसा आता है।

श्रीमती छाया वर्मा (छत्तीसगढ़): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करती हूँ।

श्रीमती सरोजिनी हेम्ब्रम (ओडिशा): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करती हूँ।

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करती हूँ।

Need to observe birth centenary of Shahir Annabhau Sathe

डा. विनय पी. सहस्त्रबुद्धे (महाराष्ट्र): माननीय सभापति जी, आज की तारीख एक अगस्त है और महाराष्ट्र में जन्मे हुए देश के दो महान सपूतों का आज स्मरण-दिवस है। हम जानते हैं कि आज लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी की पुण्यतिथि है, मगर जब दलित-साहित्य नाम का शब्द भी नहीं था, उस समय जिन्होंने महाराष्ट्र और पूरे देश के उपेक्षित, पीड़ित, शोषित समाज की वेदना को स्वर दिया, ऐसे स्वर्गीय शाहिर अण्णाभाऊ साठे की जन्म-शताब्दी का भी आज प्रारंभ हो रहा है।

मान्यवर, हम सब जानते हैं कि अण्णाभाऊ साठे ने साहित्य और समाज-सेवा के क्षेत्र में तो काम किया ही था, मगर उन्होंने विभिन्न जन-आंदोलनों का भी सफलतापूर्वक नेतृत्व किया और उनका जन्म-शताब्दी वर्ष आज से प्रारंभ हो रहा है। सदन को शायद पता नहीं होगा, मगर अण्णाभाऊ साठे ने अपनी कम आयु में ही 35 उपन्यास लिखे, 14 लोक-नाट्यों की रचना की, तीन नाटक लिखे, 13 कथा-संग्रह लिखे और जब वे सोवियत रूस गए थे, तब उस समय का एक प्रवास-वर्णन भी लिखा। पोवाडा, जो कि महाराष्ट्र के लोकगीतों की शाहिरी और संगीत की एक परम्परा है, ऐसे 10 पोवाडों के रचयिता भी वे ही थे। उन्होंने

स्त्री-पुरुष समानता की बात भी अपनी पद्धति से की, जबकि यह विषय उस समय के वातावरण में नहीं था, मगर जब हम उनके "चित्रा" तथा "वैजयंता" उपन्यासों को देखेंगे अथवा "माकडीचा मार" नामक उनका एक साहित्य, जो कि काफी मशहूर है, उसमें हम देखेंगे तो पाएंगे कि जाति-संघर्ष से ऊपर उठकर सामाजिक समरसता के लिए जिन्होंने अपनी लेखनी का काम किया, ऐसे बहुत विद्वान साहित्यकारों और समाज के लिए समर्पित साहित्यकारों में अन्नाभाऊ साठे का समावेश होता है।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से केवल तीन बिन्दु इस सदन में रखना चाहता हूँ। पहली बात यह है कि उनके साहित्य का देश के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया जाए। दूसरा, साहित्य एकैडमी में उनकी स्मृति में एक "दलित-साहित्य पीठ" का निर्माण किया जाए, ताकि वह अण्णाभाऊ साठे के नाम से पहचानी जाए। आज लोकमान्य तिलक जी की भी जयंती है और आने वाले साल में उनकी स्मृति-शताब्दी मनाई जाएगी, क्योंकि जिस दिन उनकी मृत्यु हुई, उसी दिन अण्णाभाऊ साठे का जन्म हुआ था। लोकमान्य जी की स्मृति-शताब्दी के समय मुझे यह अनुरोध करना है कि महाराष्ट्र के रत्नागिरी में उनकी जन्म-भूमि है, जिसका विकास करना जरूरी है और मुम्बई के चौपाटी में, जहाँ पर उनका दाह-संस्कार हुआ था, उसको भी एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में तब्दील करना आवश्यक है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अमर शंकर साबले (महाराष्ट्र): महोदय, मैं स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूँ।

श्री विनय दीनू तेंदुलकर (गोवा): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूँ।

श्री विजय पाल सिंह तोमर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूँ।

श्री हरनाथ सिंह यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूँ।

डा. विकास महात्मे (महाराष्ट्र): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूँ।

SHRI KAILASH SONI (Madhy Pradesh): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission of Shri Sahasrabuddhe.

SHRI KAMAKHYA PRASAD TASA (Assam): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Shri Sahasrabuddhe.

SHRIMATI VANDANA CHAVAN (Maharashtra): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Shri Sahasrabuddhe.